Toppersnotes
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	छत्तीसगढ़ का इतिहास –प्राचीन काल	1
2	वैदिक काल (1500–600 ई.पू.)	4
3	छत्तीसगढ़ में मौर्योत्तर काल	7
4	छत्तीसगढ़ में गुप्त वंश	8
5	छत्तीसगढ़ में गुप्तोत्तर काल	10
6	मध्यकालीन छत्तीसगढ़ कल्चुरी राजवंश (990–1741 ई.)	18
7	छत्तीसगढ़ में मध्यकालीन अन्य राजवंश	30
8	छत्तीसगढ़ का आधुनिक इतिहास (1741–1947 ई.)	40
9	छत्तीसगढ़ में ब्रिटिश शासन	46
10	छत्तीसगढ़ में 1857 की क्रान्ति	50
11	छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय आन्दोलन (1885–1947)	52
12	छत्तीसगढ़ की रियासतों का भारत संघ में विलीनीकरण	69
13	छत्तीसगढ़ में आदिवासी विद्रोह	72
14	छत्तीसगढ़ में मजदूर आन्दोलन (1920–40 ई.)	78
15	छत्तीसगढ़ में किसान आंदोलन	80
16	छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता का विकास	83
17	छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति	86
18	छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक स्वरूप	88
19	छत्तीसगढ़ का भौतिक विभाजन एवं स्वरूप	90
20	छत्तीसगढ़ का अपवाह क्षेत्र	94
21	छत्तीसगढ़ की जलवायु	101
22	छत्तीसगढ़ की मिट्टी	104
23	छत्तीसगढ़ में वनस्पति और वन्यजीव	106

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य	109
25	छत्तीसगढ़ कृषि जलवायु प्रदेश और फसल	111
26	छत्तीसगढ़ के प्रमुख खनिज	115
27	छत्तीसगढ़ का गठन	118
28	छत्तीसगढ़ के जिलों का पुनर्गठन	121
29	छत्तीसगढ़ की शासन व्यवस्था	123
30	छत्तीसगढ़ की कार्यपालिका	126
31	छत्तीसगढ़ की न्यायपालिका	131
32	प्राथमिक क्षेत्र – कृषि	133
33	छत्तीसगढ़ में पशुधन	136
34	द्वितीयक क्षेत्र – उद्योग	139
35	तृतीयक क्षेत्र– सेवा क्षेत्र	143
36	छत्तीसगढ़ की परिवहन व्यवस्था	144
37	छत्तीसगढ़ के उद्योग	148
38	उर्जा	153
39	छत्तीसगढ़ के जनांकिकीय आँकड़े	162
40	छत्तीसगढ़ बजट विश्लेषण 2024–25	169
41	छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ	176
42	छत्तीसगढ़ लोक कला एवं संस्कृति	190
43	छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्य और साहित्यकार	203

1 CHAPTER छत्तीसगढ़ का इतिहास :-प्राचीन काल

इतिहास

- **सामान्य अर्थ में इतिहास को अतीत की घटनाओं से जोड़ा जाता है**
- **विस्तृत अर्थ में** "इतिहास वर्तमान के प्रकाश में अतीत के अध्ययन को दर्शाता है " अर्थात वर्तमान में घटित घटनाओं को आधार बनाकर बीती हुई प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया जाता है।

छत्तीसगढ़ का इतिहास

- **प्रागैतिहासिक काल**
- **आद्यऐतिहासक काल**
- **ऐतिहासिक काल**
  - **प्राचीन काल**
    - बौद्ध कालीन
    - जैन कालीन
    - महाकाव्य काल
    - मौर्यवंश
    - मौर्योत्तर काल
    - वंश
    - गुप्त गुप्तोत्तर वंश
  - **मध्य काल**
    - बौद्ध कालीन
    - जैन कालीन
    - महाकाव्य काल
    - मौर्यवंश
    - मौर्योत्तर काल
    - वंश
    - गुप्त गुप्तोत्तर वंश
  - **आधुनिक काल**
    - 1857 की क्रांति
    - छ.ग. में मराठा शासन-अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष
    - छ.ग. में ब्रिटिश शासन- अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष
    - छ.ग. का निर्माण

प्रागैतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक** काल या पाषाण युग वह काल है, जिसके सन्दर्भ में कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है।
- इस काल के इतिहास की जानकारी मुख्यतः पुरातात्विक स्त्रोतों से प्राप्त होती है।
- पाषाण युग में मनुष्य, पशुओं की भांति जंगलों, पर्वतों और नदी के तटों पर अपना जीवन व्यतीत करता था।
- नदियों की घाटियाँ प्राकृतिक रूप से मानव का सर्वोत्तम आश्रय स्थल था।
- इस **काल** में मानव पशुओं के शिकार के लिए पत्थरों को नुकीला बनाकर औजार के रूप में प्रयोग करने लगा।
- पत्थर के प्रयोग के कारण यह युग पाषाण युग के नाम से जाना जाता है।

विकास की अवस्था के आधार पर इस युग को चार भागों में विभाजित किया गया है-

पाषाण युग

- **पूर्व पाषाण युग**
  - महानदी घाटी
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा
- **मध्य पाषाण युग**
  - रायगढ़ जिले के कबरा पहाड़
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा
- **उत्तर पाषाण युग**
  - महानदी घाटी,
  - बिलासपुर जिले के धनपुर
  - रायगढ़ जिले के सिंघनपुर
- **नव पाषाण युग**
  - बालोद जिले के अर्जुनी
  - राजनांदगाँव जिले के चितवा डोंगरी
  - रायगढ़ जिले के टेरम

नोट- ताम्र लौह युग के साक्ष्य बालोद जिले के करहीभदर, चिरचारी और सोरर से प्राप्त होते है

Toppersnotes Unleash the topper in you

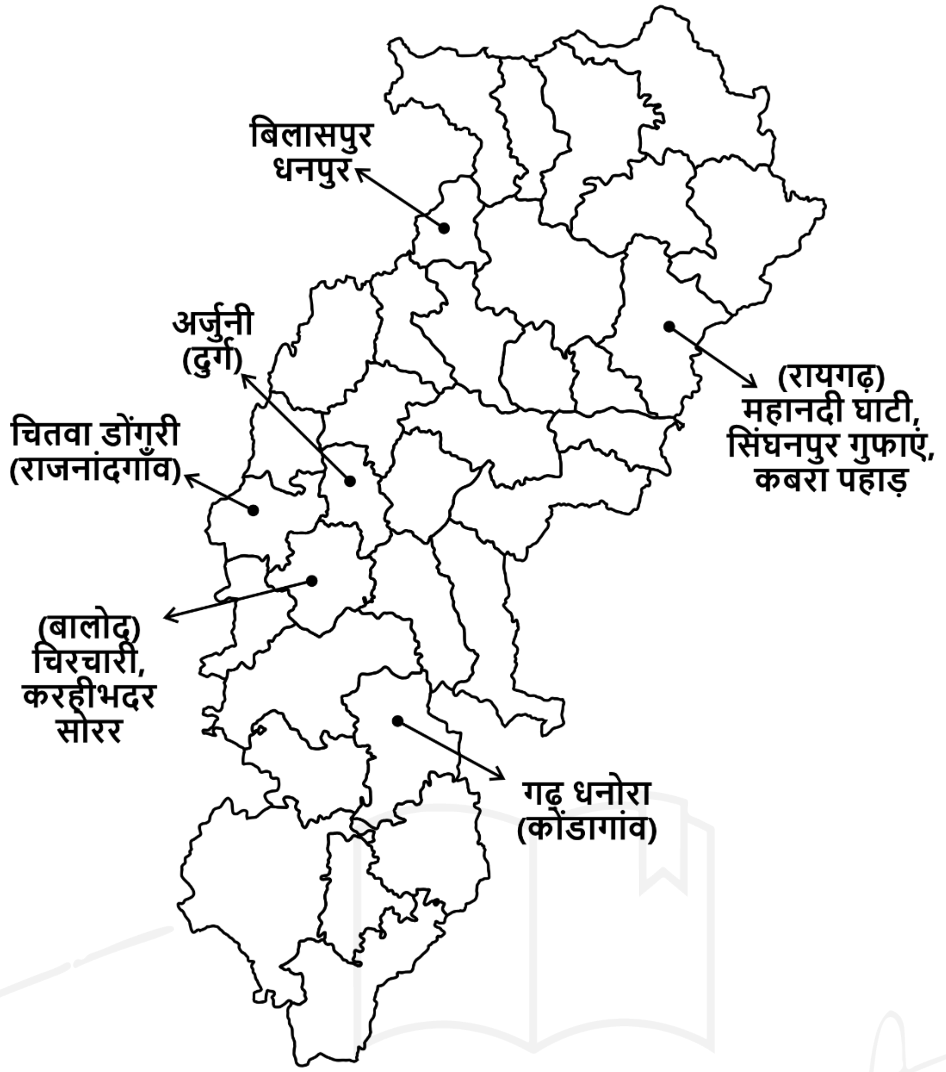

मानचित्र- प्रागैतिहासिक कालीन छत्तीसगढ़

पूर्व पाषाण युग (10लाख-10हज़ार ई.पू.)

- महानदी घाटी तथा रायगढ़ जिले के **सिंघनपुर, कबरा पहाड़, बोतल्दा, छापामारा भंवरखोल, गीधा, सोनबरसा.**
- इन क्षेत्रों में शैलचित्रों के साथ-साथ पाषाण युगीन पत्थर के साथ लघु पाषाण औजार भी प्राप्त हुए हैं।

मध्य पाषाण युग (10हज़ार-9हज़ार ई.पू.)

- मध्य युग के लंबे फलक, अर्द्ध चंद्राकार लघु पाषाण के औजार रायगढ़ जिले के '**कबरा पहाड़**' से चित्रित शैलाश्रय के निकट से प्राप्त हुए हैं।
- इस काल के उपकरण अवशेष बस्तर जिले में **कालीपुर, गढ़धनोरा, खड़ागघाट, गढ़चंदेला, घाटलोहांग, भातेवाड़ा, राजपुर** आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

उत्तर पाषाण युग (9हज़ार-7हज़ार ई.पू.)

- उत्तर पाषाण युग के लघुकृत पाषाण औजार एवं लंबे फलक, अर्ध चंद्राकार फलक, महानदी घाटी, बिलासपुर जिले के **धनपुर** तथा रायगढ़ जिले के **सिंघनपुर** के चित्रित शैलगृहों के निकट से प्राप्त हुए हैं।
- छत्तीसगढ़ से लगे हुए ओड़िशा के कालाहांडी, बलांगीर एवं संबलपुर जिले की **तेल नदी एवं उसकी सहायक नदियों** के तटवर्ती क्षेत्र से लगभग **26 स्थानों से** इस काल के औजार प्राप्त हुए हैं।

नव पाषाण काल (7हज़ार-4हज़ार ई.पू.)

- इस काल में मनुष्य ने कृषि कर्म, पशु पालन, गृह निर्माण तथा बर्तनों का निर्माण, कपास अथवा ऊन कातना आदि कार्य सीख लिया था ।
- इस युग के औजार बालोद जिले के **अर्जुनी**, राजनांदगाँव जिले के **चितवा डोंगरी** तथा रायगढ़ जिले के **टेरम** नामक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- धमतरी **बालोद मार्ग** पर लोहे के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- नव पाषाण काल में मनुष्य गुफाओं में चित्रकारी करने की कला जानता थे।

छत्तीसगढ़ से सम्बंधित अन्य प्रागैतिहासिक स्थल

स्थान	जिला	विशेष
उड़कुरा	कांकेर	एलियन का चित्रण
चितवा डोंगरी	राजनांदगांव	चीनी ड्रैगन
सिंघनपुर	रायगढ़	सबसे सप्राचीनतम शैलचित्र मनुष्य समूह सीढ़ी से आखेट करता मनुष्य
कबरा पहाड़	रायगढ़	लाल रंग की छिपकली सर्वाधिक शैलचित्र
करमागढ़	रायगढ़	जलचर प्राणी के चित्र सांप, मछली, मेढक
बेलीपाठ	रायगढ़	मछली व पुष्पलताओं का चित्र
खैरपुर	रायगढ़	अंधेर में चमकते शैल चित्र
टीपाखोल	रायगढ़	मानव व पशुओं के अंधेर में चमकते चित्र
बोतल्दा	रायगढ़	प्राग ऐतिहासिक कालीन सबसे लम्बी गुफा सूर्य मंदिर के अवशेष (गुप्तकालीन)
भैसगढी	रायगढ़	शैलचित्र.
ओगना	रायगढ़	पुष्पलताओं व पक्षी का चित्रण

छत्तीसगढ़ से सम्बंधित प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्र

- सिंघनपुर ग्राम के समीप चंवरढाल पहाड़ियां के शैलाश्रयों को सर्वप्रथम **1910 ई. एण्डरसन ने** देखा था तथा बाद में **रेल्वे इंजीनियर अमरनाथ दत्त** ने इन शैलचित्रों (गुफा चित्रों) का अध्ययन किया।
- **सर्वाधिक शैलचित्र रायगढ़ जिले में** प्राप्त हुए हैं।
- **रायगढ़ जिले** के सिंघनपुर, कबरा पहाड़, करमागढ़, बसनाझार, ओंगना, बोतल्दा आदि स्थानों से प्राचीनतम शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।
- सामन्यतः शैलचित्र लाल रंग के पशुओं, सरीसृपों तथा टोटेमवादी चिन्हों का विभिन्न रूपांकन के रूप में है।
- खड़ी तथा आड़ी रेखाएं खींचकर मानव आकृतियां बनाई गई हैं।
- एक चित्र में कुछ व्यक्तियों के समूह को सुंदर तथा लाठियां हाथों में लिए पशु को पीछे की ओर गर्दन मोड़े दिखाया गया है और एक मनुष्य को डरावनी मुद्रा में चित्रित किया गया है।
- **कबरा पहाड़ में** लाल में लाल रंग से छिपकली, घड़ियाल, सांभर अन्य पशुओं तथा पंक्तिबद्ध मानव समूह का चित्रण किया गया है।
- **सिंघनपुर में** मानव आकृतियाँ, सीधी, दण्ड के आकार की तथा सीढ़ी के आकार में अंकित की गई है।
- **राजनांदगांव जिले में** अंबागढ़ चौकी के चितवा डोंगरी के शैलचित्रों का सर्वप्रथम अध्ययन भगवान सिंह बघेल एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने किया था।

आद्य ऐतिहासिक काल

- प्रागैतिहासिक काल एवं ऐतिहासिक काल के मध्य का संक्रमण काल आद्य ऐतिहासिक काल कहलाता है।
- इस कालखंड का सम्बन्ध सिंधु घाटी कांस्य युगीन सभ्यता से है छत्तीसगढ़ में इस सभ्यता के साक्ष्य सामान्यतः प्राप्त नहीं हुए हैं
- सिंधु सभ्यता के लोग कांस्य निर्माण में ताँबे एवं टिन का प्रयोग करते थे।
- सिन्धु घाटी सभ्यता में लघु मूर्तियों के निर्माण में लॉस्ट वैक्स पद्धति का प्रयोग किया जाता था। इसे वर्तमान में बस्तर के घड़वा शिल्प से संदर्भित किया जा सकता है।

महापाषाण काल एवं ताम्रपाषाण काल

- पाषाण युग के पश्चात् 'ताम्रयुग' आता है जिसमें ताम्र और पाषाण दोनों से ही निर्मित औजार प्रयोग में लाये जाते थे ।
- छत्तीसगढ़ के दक्षिण कोसल क्षेत्र में इस काल की सामग्री का अभाव है, किन्तु निकटवर्ती बालाघाट जिले के **'गुंगेरिया'** नामक स्थान से ताँबे के औजार का एक बड़ा संग्रह प्राप्त हुआ है। यहाँ से 424 तांबे के औजार और 102 चाँदी के आभूषण मिले।
- ताम्रयुग में शव को गाड़ने के लिये बड़े-बड़े शिलाखण्डों का प्रयोग किया जाता था। इसे महापाषाण स्मारकों के नाम से संबोधित किया जाता है।
- इन समाधियों को **'महापाषाण पट्टतुम्भ'** (डॉलमेन) भी कहा जाता है।
- **बालोद जिले** के करहीभदर, चिरचारी और सोरर में पाषाण घेरों के अवशेष मिले हैं। इसी जिले के करकाभाटा से पाषाण घेरे के साथ लोहे के औजार और मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं।
- **धनोरा** (बालोद जिला) से लगभग **500 महापाषाण स्मारक** प्राप्त हुए हैं, जिसकी खुदाई **सन् 1956-57 में डॉ. एम. जी. दीक्षित** द्वारा किया गया तथा जिसका **व्यापक सर्वेक्षण प्रोफेसर जे. आर. कांबले एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र** ने सर्वप्रथम किया है।
- **कालाहाण्डी जिले की नवापारा तहसील में** स्थित सोनाभीर नामक ग्राम में पाषाण का घेरा मिला है।
- कोण्डागांव **जिले के गढ़धनोरा में** ताम्रपाषाण कालीन आवास का घेरा प्राप्त हुआ है।

2 CHAPTER

वैदिक काल(1500-600 ई.पू.)

पूर्व वैदिक काल(1500-1000 ई.पू.)

- पूर्व वैदिक सभ्यता की जानकारी देने वाले ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में छत्तीसगढ़ से संबंधित कोई जानकारी नहीं मिलती।
- इसमें विन्ध्य पर्वत एवं नर्मदा नदी का उल्लेख नहीं है।
- ऋग्वेद में उल्लेखित '**दक्षिणपदा**' शब्द से मैण्डानल एवं कीथ ने दक्षिणापथ अर्थात् विन्ध्य के दक्षिणवर्ती भू-प्रदेश का आशय ग्रहण किया है।

उत्तर वैदिक काल(1000-600 ई.पू.)

- इस काल में देश के दक्षिण भाग से संबंधित विवरण मिलते हैं।
- उत्तर वैदिक साहित्य में आये दक्षिणदिक से **सीतानाथ प्रधान** ने दक्कन प्रदेश का बोध होना स्वीकार किया है।
- '**शतपथ ब्राह्मण**' में पूर्व एवं पश्चिम में स्थित समुद्रों का उल्लेख मिलता है।
- '**कौषीतिक उपनिषद**' में विंध्य पर्वत का नामोल्लेख है।
- परवर्ती वैदिक साहित्य में **नर्मदा का उल्लेख रेवा के रूप में** मिलता है।
- वैदिक आर्य दक्षिण पथ के अन्तर्गत दक्कन के पूर्वोत्तर में स्थित छत्तीसगढ़ से भली-भांति परिचित थे।

महाकाव्य काल

रामायण काल

- राम की माता कौशल्या **राजा भानुमन्त** की पुत्री थी। कौशल्या का नाम अपने पिता के नाम के कारण भानुमति ही था।
- राजा दशरथ से विवाह के बाद भानुमति कोसल प्रदेश के होने के कारण कौशल्या नाम से पुकारी गयी।
- '**कोसल खण्ड**' नामक एक अप्रकाशित ग्रन्थ से जानकारी मिलती है कि विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में नागपत्तन के पास कोसल नामक एक शक्तिशाली राजा था। इनके नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम कोसल पड़ा।
- राजा कोसल के वंश में भानुमन्त नामक राजा हुआ, जिसकी पुत्री का विवाह अयोध्या के राजा दशरथ से हुआ था। भानुमन्त का कोई पुत्र नहीं था, अतः कोसल (छत्तीसगढ़) का राज्य राजा दशरथ को प्राप्त हुआ।
- इस प्रकार राजा दशरथ के पूर्व ही इस क्षेत्र का नाम कोसल होना ज्ञात होता है।
- मान्यता अनुसार वनवास के समय संभवतः श्री राम ने अधिकांश समय छत्तीसगढ़ के आस-पास के क्षेत्र में व्यतीत किया था।
- श्री राम के पश्चात् **'उत्तर कोसल' के राजा उनके ज्येष्ठ पुत्र लव** हुए, जिनकी राजधानी श्रावस्ती थी और अनुज **कुश को 'दक्षिणकोसल'** मिला, जिसकी राजधानी कुशस्थली थी।

स्थानीय परंपरा के अनुसार रामायण कालीन प्रमुख स्थल-

क्षेत्र	रामायणकालीन सम्बंधित घटनाएं
शिवरीनारायण (जिला- जांजगीर-चांपा)	• राम ने यहीं शबरी के जूठे बेर खाए ।
खरौद (जिला- जांजगीर-चांपा)	• राम द्वारा खरदूषण का वध ।
तुरतुरिया (जिला- बलौदाबाजार)	• महर्षि वाल्मीकि का आश्रम जहां लवऔर कुश का जन्म हुआ ।
पंचवटी (केशकाल के निकट)	• रावण द्वारा सीताहरण।
दण्डकारण्य (बस्तर)	• रामायण के अरण्य काण्ड में दण्डकवन के रूप में इस क्षेत्र उल्लेख किया गया है। • वनवास के दौरान राम ने यहां अपना अधिकांश समय बिताया।
सिहावा पर्वत (धमतरी)	• श्रृंगी ऋषि का आश्रम, श्रृंगी ऋषि ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था।
रामगढ़ की पहाड़ी (सरगुजा)	• सीताबेंगरा, रामगढ़, लक्ष्मणबेंगरा, किसकिंधा पर्वत, सीताकुण्ड हाथीखोह, • इन स्थानों पर वनवास के दौरान राम, लक्ष्मण और सीता ने अपना समय व्यतीत किया था।
रामझरना (रायगढ़), कोरिया	• सीतामढ़ी हरचौका, सीतामढ़ी घाघरा ।

छत्तीसगढ़ में राम वन गमन पथ

- भगवान राम अपने वनवास काल के दौरान छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्रवेश से लेकर छत्तीसगढ़ के भू-भाग को छोड़ने तक अर्थात् **कोरिया से लेकर सुकमा** तक |
- राम वन गमन पथ की विस्तृत कार्ययोजना को लेकर छत्तीसगढ़ सरकार का लक्ष्य पहले चरण का कार्य 2022 के अंत तक या 2023 के मध्य तक पहले चरण का लक्ष्य पूरा करना था।"
- राम वन गमन पथ की **कुल लंबाई 2260 किलोमीटर** है।
- इन रास्तों पर किनारे जगह-जगह साइन बोर्ड, श्री राम के वनवास से जुड़ी कथाएं देखने और सुनने को मिलेंगी।
- राम वन गमन पथ के पहले चरण में 9 स्थानों का चयन किया गया है। वे स्थान हैं-
    1. हरचौका (कोरिया),
    2. रामगढ़ (सरगुजा),
    3. शिवरीनारायण (जांजगीर चांपा),
    4. तुरतुरिया (बलौदाबाजार),
    5. चंद्रखुरी (रायपुर),
    6. राजिम (गरियाबंद),
    7. सिहावा सप्तऋषि आश्रम (धमतरी),
    8. जगदलपुर (बस्तर),
    9. जगत रामाराम (सुकमा)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

महाभारत काल

- महाभारत काल में इस क्षेत्र का उल्लेख **सहदेव द्वारा जीते गए राज्यों में प्राक्कोसल के रूप में** मिलता है।
- बस्तर के जंगली क्षेत्र को '**कान्तार**' कहा गया है।
- कर्ण द्वारा की गई दिग्विजय में भी कोसल जनपद का नाम मिलता है।
- राजा नल के दक्षिण दिशा का मार्ग बनाते हुए भी विन्ध्य के दक्षिण में कोसल राज्य का उल्लेख किया था।
- महाभारतकालीन ऋषभतीर्थ भी जांजगीर-चांपा जिले में सक्ती के निकट '**गुंजी**' नामक स्थान से समीकृत किया जाता है।
- **पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनुसार** महाभारत के वनपर्व में वर्णित **ऋषमतीर्थ** नामक स्थान जो जांजगीर-चांपा जिले में सक्ती के निकट स्थित है

- स्थानीय परंपरा के अनुसार भी **मोरध्वज और ताम्रध्वज की राजधानी 'मणिपुर**' का तादात्म्य वर्तमान 'रतनपुर' से किया जाता है।
- माना जाता है कि अर्जुन पुत्र 'बभ्रुवाहन' की राजधानी चित्रंगदपुर (सिरपुर) थी।
- रायपुर जिले के आरंग को भी मोरध्वज की नगरी कहा जाता है।
- राजा मोरध्वज ने अपने पुत्र ताम्रध्वज को आरे से छद्मवेशी सिंह के लिए काट दिया था। आरे से अंग को काटे जाने के कारण इस नगर का नाम आरंग पड़ा।
- जनश्रुति के अनुसार के अनुसार **खल्लारी (महासमुंद) में दुर्योधन ने लाख का महल** (लाक्षागृह) का निर्माण करवाया।
- इस क्षेत्र में राज्य करते हुए **इक्ष्वाकुवंशियों** का वर्णन मिलता है।
- साथ ही यह भी माना जाता है कि वैवस्वत मनु के पौत्र तथा सुद्युम्न के पुत्र विवस्वान को यह क्षेत्र प्राप्त हुआ था।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3
CHAPTER

छत्तीसगढ़ में मौर्योत्तर काल

छत्तीसगढ़ में मौर्योत्तर काल

- शुंग वंश
- खारवेल वंश
- सातवाहन वंश
- कुषाण वंश
- मेघ वंश

शुंग वंश

- शुंगवंशीय पुष्यमित्र ने मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या कर शुंग वंश की स्थापना की।
- सर्वप्रथम इसने बौद्धों को शासन से हटाया और बौद्ध संघ के प्रभाव को कम किया।
- वैदिक हिन्दू धर्म की जागृति हेतु उसने अश्वमेध यज्ञ पुनः प्रारंभ कर विक्रमादित्य की उपाधि धारण की, जिससे उसके राज्य में गाय, ब्राह्मण और गंगा को फिर से उच्च स्थान प्राप्त हो गया।
- दक्षिण कोसल में शुंग वंश का शासन अल्पकालिक रहा।

खारवेल वंश

- खारवेल ने शुंगों पर आक्रमण किया।
- इस वंश के लोग चेदिया कहलाते थे।
- भुवनेश्वर के पास खण्डगिरि के हाथी गुम्फा में इस राजा की प्रशस्ति अंकित है।
- खारवेल ने जैन धर्म के प्रचार का काफी प्रयास किया था।
- चेदि वंश बुंदेलखण्ड से कोसल में आ बसा और फिर कलिंग को चला गया।

सातवाहन वंश

- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् दक्षिण भारत में सातवाहन राज्य की स्थापना हुई।
- **पूर्वी क्षेत्र में चेंदीवंश** का उदय हुआ। **दक्षिण कोसल का अधिकांश भाग सातवाहनों** के प्रभाव क्षेत्र में था। इसका पूर्वी भाग संभवतः चेदिवंश के राजा खारवेल के अधिकार के अंतर्गत था।
- **सातवाहन राजा अपीलक** की एकमात्र मुद्रा रायगढ़ जिले के 'बालपुर' नामक स्थल से प्राप्त हुई है।
- उल्लेखनीय है कि अपीलक का उल्लेख सातवाहन वंश के अभिलेखों में नहीं मिलता, किन्तु पौराणिक विवरणों से इसके सातवाहन राजा होने की पुष्टि होती है।
- सक्ती के निकट **'गुंजी' (ऋषभतीर्थ)** से प्राप्त शिलालेख में सातवाहन **राजा कुमार वरदत्तश्री** का उल्लेख है।
- इसी काल का एक काष्ठ स्तंभ लेख जांजगीर जिले के **'किरारी' (चन्द्रपुर)** नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसमे अधिकारियों के पद नाम का उल्लेख है, जो उस काल में प्रचलित रहे होंगे **जैसे- नगर रक्षिन,सेनापति, प्रतिहार, रथिक, सौगंधक, गोमांडलिक ।**
- राज्य के अनेक स्थलों से सातवाहन कालीन ताँबे के आयताकार सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनमें एक ओर हाथी तथा दूसरी ओर स्त्री अथवा नाग का अंकन है ।
- इसी काल में **रोम की स्वर्ण मुद्राएँ** भी मिलती हैं, जो रोम से व्यापार सम्बन्ध को दर्शाता है ।
- इस काल की **बुढ़ीखार** नामक स्थान में लेख युक्त एक प्रतिमा प्राप्त हुई है।
- **मल्हार** में उत्खनन से दूसरे स्तर पर (जो सातवाहन काल का माना गया है) प्राप्त मिट्टी की मुहर में वैदसिरिस (वेदश्री) लेख अंकित मिलता है।
- चीनी यात्री व्हेनसांग ने उल्लेख किया है कि दक्षिण कोसल की राजधानी के निकट एक पर्वत पर सातवाहन राजा ने एक सुरंग खुदवाकर प्रसिद्ध भिक्षु नागार्जुन के लिए एक पांच मंजिला भव्य संघाराम बनवाया था।

कुषाण वंश

- सातवाहनों के समकालीन कुषाण वंशीय शासक कनिष्क के कई सिक्के इस भाग में प्राप्त हुए हैं।
- **रायगढ़ जिले में** खरसिया तहसील के तेलीकोट गांव में **पुरातत्वविद् डॉ. सी. के साहू** को कुषाण कालीन सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- **बिलासपुर जिले में** कुषाण वंशीय राजाओं के ताम्बे के सिक्के प्राप्त हुए हैं।

मेघ वंश

- सातवाहनों के पश्चात् संभवतः दक्षिण कोसल में 'मेघ' नामक वंश ने राज्य किया।
- पुराणों के विवरण से ज्ञात होता है कि गुप्तों के उदय के पूर्व कोसल में मेघ वंश के शासक राज्य करेंगे।
- ऐसा माना जाता है कि इस वंश ने यहाँ द्वितीय शताब्दी ईस्वी तक राज्य किया।

4 CHAPTER छत्तीसगढ़ में गुप्त वंश

- उत्तर भारत में शुंग एवं कुषाण सत्ता के पश्चात् गुप्त वंश ने राज्य किया ।
- **प्रो. बालचन्द जैन के अनुसार**, मगध के गुप्त वंश का प्रभाव छत्तीसगढ़ पर उस समय पड़ा जब **समुद्रगुप्त** ने आर्यावर्त के राजाओं को जीतकर दक्षिणापथ की विजय यात्रा की।
- गुप्तवंश के **सम्राट समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति** से ज्ञात होता है कि इसने दक्षिणापथ की दिग्विजय के समय सर्वप्रथम **दक्षिण कोसल के राजा महेन्द्र को पराजित** किया था ।
- महेन्द्र के उत्तराधिकारियों के विषय में जानकारी नहीं मिलती, किन्तु **सन् 1972** ई. में दुर्ग जिले के **'बानबरद'** नामक स्थान से 20 स्वर्ण गुप्त मुद्राओं की प्राप्ति हुई, जिसमें 09 स्वर्ण सिक्के में से एक कांच (समुद्रगुप्त), एक कुमारगुप्त और सात सिक्के चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के हैं।
- **बस्तर और सिहावा के जंगली प्रदेश (महाकान्तर)** के अधिपति व्याघ्रराज ने भी समुद्रगुप्त के सम्मुख अपनी पराजय स्वीकार कर ली थी। व्याघ्रराज का संबंध संभवतः नल वंश से था ।
- **आरंग (रायपुर) से** पांचवीं शताब्दी का एक रजत जड़ी तांबे का सिक्का मिला है।
- डॉ. विष्णु सिंह ठाकुर अनुसार आरंग से प्राप्त सिक्के पर निम्न अंश अंकित है- **"परमभगवत् महाराजाधिराज श्री कुमारगुप्त महेन्द्रादित्यस्य"**।
- **रायपुर जिले के पिटाईवल्द ग्राम में** 40 सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनमें गुप्त वंशीय राजा का नाम महेन्द्रादित्य विक्रमादित्य उल्लेखित हैं। ये नाम कुमारगुप्त व स्कंदगुप्त के ही थे।
- **खैरताल (रायपुर)** से कुमारगुप्त के 215 उत्पीड़ितांक (उभार) मुद्राएं प्राप्त हुए है, जिस पर महेन्द्रादित्यस्य उत्कीर्ण है।
- **खरसिया के समीप** एक गाँव से चन्द्रगुप्त **विक्रमादित्य का धनुर्धारी प्रकार का स्वर्ण सिक्का** प्राप्त हुआ है।

गुप्त शासन के समकालीन राज्य

- **वाकाटक काल**
- **राजर्षितुल्य वंशज**
- **पर्वतद्वारक वंश**

वाकाटक काल

- दक्षिण भारत के सातवाहन शक्ति के पराभव के पश्चात वाकाटक राज्य की स्थापना हुई।
- **डॉ. वासुदेव विष्णु मिराशी के अनुसार-** वाकाटक नरेश **प्रवरसेन प्रथम** ने दक्षिण कोसल के समूचे क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापत कर लिया था।
- प्रवरसेन प्रथम की मृत्यु के बाद राज्य क्षीण होने लगा और गुप्तों ने दक्षिण कोसल पर अपना अधिकार कर लिया। यह घटना 3-4वीं सदी के बीच के काल की है।
- डॉ. मिराशी के अनुसार प्रवरसेन प्रथम का तीसरा बेटा दक्षिण कोसल में राज्य करता था। प्रमाण स्वरूप **दुर्ग में एक अपूर्ण ताम्रपत्र** प्राप्त हुआ है।
- ताम्रपत्र अभिलेख में भारशिव राजा भवनाग के दौहित्र तथा प्रवरसेन प्रथम के पौत्र का उल्लेख है, जो संभवतः प्रवरसेन द्वितीय था ।
- **प्रवरसेन द्वितीय,** रूद्रसेन द्वितीय एवं प्रभावती का पुत्र था।
- प्रवरसेन द्वितीय की शिक्षा-दीक्षा चन्द्रगुप्त के दरबारी कवि कालिदास द्वारा हुई थी।
- **वाकाटक प्रवरेसन के आश्रय में कुछ समय भारत के प्रसिद्ध कवि कालिदास ने व्यतीत किया था।**
- कालिदास ने कोसल राज्य की यात्रा के दौरान सरगुजा को स्वर्ग का द्वार कहा था तथा सरगुजा के रामगढ़ पहाड़ी पर अपनी प्रसिद्ध रचना मेघदूतम की रचना की।
- वाकाटक नरेश **पृथ्वीसेन द्वितीय** के **बालाघाट ताम्रपत्र** से ज्ञात होता है कि उसके पिता नरेन्द्र सेन ने कोसल के साथ मालवा और मैकल में अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।
- नरेन्द्रसेन एवं उसके पुत्र पृथ्वीसेन द्वितीय का संघर्ष बस्तर कोरापुट क्षेत्र में राज्य करने वाले नल शासकों से होता रहा।
- **ऋद्धिपुर ताम्रपत्र** अनुसार नल शासक भवदत्त वर्मा ने नरेन्द्र सेन की राजधानी नंदीवर्धन (नागपुर) पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था।
- **केसरीबेड़ा एवं पंडियापाथर ताम्रपत्र** के अनुसार पृथ्वी सेन द्वितीय ने भवदत्त के उत्तराधिकारी अर्थपति को पराजित किया। ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में अर्थपति की मृत्यु हो गई थी।
- दक्षिण कोसल में राजा स्कंदबर्मन द्वारा तत्कालीन वाकटक शासक देवसेन को पराजित कर नल वंश की पुनः स्थापना कर बस्तर के पुष्करी (भोपालपट्टनम) को राजधानी बनाया।
- कालांतर में वाकाटकों के **वत्सगुल्म शाखा के राजा हरिसेन ने** दक्षिण कोसल क्षेत्र में अपना अधिकार स्थापित कर लिया।
- संभवतः त्रिपुरी के कल्चरियों ने वाकाटकों का अंत कर दिया।

राजर्षितुल्य वंशज (182-282 गुप्त संवत)

- **संस्थापक- शूरा**
- **शासन क्षेत्र- दक्षिण कोसल**
- **आरंग में प्राप्त भीमसेन द्वितीय के ताम्रपत्र अभिलेख** से दक्षिण कोसल में राजर्षितुल्य के राजाओं के शासन का प्रमाण मिला है।
- इस ताम्रपत्र से यह ज्ञात होता है कि इस वंश ने गुप्त संवत का प्रयोग किया था, जिसकी तिथि 182-282 गुप्त संवत अंकित है।
- छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय राजवंश **राजर्षितुल्य वंश के संस्थापक शूरा** था, जिस कारण यह वंश भी शूरा वंश कहलाता है।
- राजर्षितुल्य वंश द्वारा गुप्त संवत के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि इस वंश के शासक गुप्त अधिसत्ता स्वीकार करते थे।
- आरंग ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि राजर्षितुल्य के **छः राजाओं क्रमशः शूरा, दयित, विभीषण, भीमसेन प्रथम, दवित द्वितीय तथा भीमसेन द्वितीय** ने राज्य किया था।
- कलिंग के **खारवेल की उड़ीसा प्रशस्ति में राजर्षितुल्यकुलविनसुत** उल्लेखित है, जिससे यह प्रतीत होता है कि राजा खारवेल भी राजर्षितुल्य वंश का रहा होगा।
- आरंग ताम्रपत्र में महाराजा भीमसेन द्वितीय द्वारा **हरिस्वामी और बप्पस्वामी** को दोण्डा में स्थित भाटपल्लिक नामक ग्राम देने का उल्लेख है।

पर्वतद्वारक वंश

- **महाराज तुष्टिकर के तेराशिंघा ताम्रपत्र** से तेल घाटी में राज्य करने वाले एक वंश के विषय में जानकारी मिलती है।
- इस वंश के लोग **स्तंभेश्वरी देवी के उपासक** थे, जिसका स्थान पर्वतद्वारक में था, जिसकी समानता कालाहाण्डी जिले के **'पर्थला'** नामक स्थान से की जाती है।
- पर्वतद्वारक वंश का नाम इसी आधार पर रखा गया है, जिसके अधिकार क्षेत्र में रायपुर का दक्षिणी भाग आता था।
- तेराशिंघा ताम्रपत्र से दो शासकों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।
- पहले **राजा सोमन्नराज** - जब इनकी माता कौस्तुभेश्वरी ज्वर से बीमार पड़ गई थी, तब सोमन्नराज ने देभोग (रायपुर जिले के देवभोग) क्षेत्र का दान किया।
- दूसरे **राजा तुष्टिकर**- इनके द्वारा तारभ्रमक से पर्वतद्वारक नामक ग्राम दान में दिया गया था।

Toppersnotes Unleash the topper in you

5 CHAPTER छत्तीसगढ़ में गुप्तोत्तर काल

- **बस्तर के नलवंश**
- **शरभपुरीय वंश**
- **श्रीपुर के पाण्डुवंश अथवा सोमवंश**
- **बाणवंश**
- **सोमवंश**

बस्तर के नलवंश (5-12 शताब्दी ई.)

- **वंश के संस्थापक- वराहराज (शिशुक)।**
- **शासन क्षेत्र-** बस्तर कोरापुट (वर्तमान कांकेर)
- **राजधानी-** पुष्करी (वर्तमान भोपालपट्टनम-बीजापुर जिला)।
- इस वंश में प्रतापी शासक भवदत्त वर्मन हुए।
- वाकाटक इस वंश के समकालीन थे। इन दोनों वंशों के बीच लंबा संघर्ष चला।
- समुद्रगुप्त प्रयाग प्रशस्ति में उल्लिखित महाकांतार के राजा व्याघ्रराज का संबंध कुछ इतिहासकारों ने बस्तर-कोरापुट के नल वंश से स्थापित किया है।
- इस वंश के बारे में जानकारी देने वाले कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख हैं-
  1. भवदत्त वर्मा का ऋद्धिपुर ताम्रपत्र (अमरावती)
  2. पोड़ागढ़ (जैपुर राज्य) शिलालेख
  3. अर्थपति काकेशरिबेड़ा ताम्रपत्र पंडियापाथर लेख (ओडिशा)
  4. विलासतुंग का राजिम शिलालेख नलों के संबंध में प्राप्त अन्य अभिलेख
  5. समुद्र गुप्त की प्रयाग प्रशस्ति
  6. गुप्त (वाकाटक) का ऋद्धिपुर ताम्रपत्र
  7. चालुक्य पुलिकेशिन प्रथम की एहोल प्रशस्ति
  8. पल्लव नंदीवर्धन के उदयेन्दिरम् ताम्रपत्र

नल वंश कालीन सिक्के

- **कोण्डागांव के ग्राम एडेंगा तथा बालोद के ग्राम कुलिया** से कुल 55 स्वर्ण मुद्रानिधियां प्राप्त हुए हैं।
- कोण्डागांव के एडेंगा नामक ग्राम से कुल 32 स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुए हैं, जिनमें नलवंश के शासक वराहराज के 29, भवदत्त वर्मा के 1 और अर्थपतिभट्टारक के 2 स्वर्ण मुद्रा मिले हैं। वर्तमान में ये स्वर्ण मुद्रानिधियां नागपुर संग्रहालय में है।
- नल शासकों की स्वर्ण मुद्राओं का अध्ययन इतिहासकार **डॉ. वासुदेव विष्णु मिराशी** ने किया है।
- नलवंश के सिक्कों के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि इनके सिक्कों पर **नन्दी तथा अर्द्धचन्द्र की आकृति का अंकन** किया गया है।
- सिक्कों में अंकित लेख लिपि अभिलेखों की लिपि से साम्य रखती है। सामान्यतः इन पर अंकित लेख संस्कृत में मिलते हैं।
- सिक्कों के मुख भाग पर चित्र एवं लेख हैं, जबकि पृष्ठभाग पूर्ण रिक्त है।
- बालोद जिले के कुलिया ग्राम से प्राप्त 20 स्वर्ण सिक्कों से बस्तर के इतिहास के अन्धकार युग के बारे में जानकारी मिलती है।
- लक्ष्मीशंकर निगम ने **कुलिया** से प्राप्त इन मुद्राओं का अध्ययन किया है।

नलवंशीय शासक

- नलवंशीय अपना संबंध पौराणिक नल से स्थापित करते हैं, किन्तु ऐसे कोई साक्ष्य नहीं मिलते हैं।
- वैदिक कालीन ग्रन्थों यथा- शतपथ ब्राह्ममण, रामायण, महाभारत आदि में नलों का उल्लेख मिलता है।

शिशुक (290-330 ई.)

- शिशुक नल वंश का आदिपुरुष एवं संस्थापक था। पौराणिक साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है।

व्याघ्रराज (330-370 ई.)

- 350 ईस्वी में महाकान्तार में व्याघ्रराज का शासन होने का विवरण मिलता है।
- इस तिथि के आसपास ही बस्तर अंचल में नलवंश के शासन का प्रारम्भ मान सकते हैं। अतः **व्याघ्रराज को नलवंश का प्रथम शासक** के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में महाकान्तार के शासक के रुप में व्याघ्रराज का नाम आता है।
- समुद्रगुप्त ने दक्षिण अभियान में अपने **'ग्रहणमोक्षानग्रह की नीति के अनुसार** दक्षिण के अन्य शासकों की तरह व्याघ्रराज को पराजित कर उसे गुप्त राजवंश के अधीन बस्तर क्षेत्र में शासन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की थी।
- व्याघ्रराज को हराकर समुद्रगुप्त ने **'व्याघ्रदंता'** की उपाधि धारण की थी।

Unleash the topper in you

वृशध्वज (370-400 ई.)

- इसके शासन काल के संबंध में कोई मानक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

वराहराज (400 -435 ई.)

- एडेंगा के मुद्राभाण्ड में वराहराज (400-440 ई.) की 29 स्वर्ण मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।इन सिक्कों पर श्रीवराहराजस्य उत्कीर्ण है।
- वराहराज के सिक्कों पर नन्दी का अंकन उसके शैव मतानुयायी होना प्रदर्शित करता है।
- डॉ. वासुदेव विष्णु मिराशी का मत है कि यह भवदत्त का पूर्ववर्ती संभवतः उसका पिता था।
- अभिलेखीय साक्ष्यों से **नल-वाकाटक संघर्ष** की जानकारी मिलती है।

भवदत्त वर्मन (435-465 ई.)

- नलवंश में वराहराज का उत्तराधिकारी भवदत्तवर्मन हुआ।
- स्कन्दवर्मा के **पोड़ागढ़ प्रस्तराभिलेख** में 'भवदत्त' नाम उत्कीर्ण है।
- भवदत्तवर्मा के ताम्रपत्र में 'भवदत्तवर्मन' का अंकन मिलता है।
- भवदत्तवर्मन का समकालीन वाकाटक शासक नरेन्द्रसेन था।
- सम्भवतः भवदत्तवर्मन के पिता वराहराज को वाकाटक नृपति नरेन्द्रसेन ने युद्ध में पराजित किया था। अतः अपने राज्यारोहण के बाद भवदत्तवर्मन ने पराजय का बदला लिया।
- भवदत्तवर्मन ने वाकाटकों की राजधानी नन्दिवर्धन से एक ताम्रपत्र अपने पिता की पराजय का बदला जारी किया था। यह अभिलेख नल नृपति के विषय का विवरण प्रस्तुत करता है।
- भवदत्तवर्मन के राज्य का विस्तार **ओड़िसा के कोरापुट से विदर्भ में नन्दिवर्धन तक** विस्तृत था।
- नरेन्द्रसेन की यह पराजय अल्पकालीन थी। नरेन्द्रसेन के उत्तराधिकारी पृथ्वीसेन द्वितीय के बालाघाट अभिलेख से ज्ञात होता है कि पृथ्वीसेन द्वितीय ने नल शासक भवदत्तवर्मन से अपने वंश परम्परा की रक्षा की थी।
- **ऋद्धिपुर ताम्रपत्र में** नल नृपति भवदत्तवर्मन को 'महाराज', 'नलवंशप्रसूतः", 'महेश्वर', महासेनापतिसृष्टराज्यविभवः', 'श्रीमहाराजभवदत्तवर्मा, 'त्रिपताकाध्वजः' आदि विरूदों से सम्बोधित किया गया है।
- भवदत्तवर्मन, महेश्वर अर्थात् भगवान शिव एवं कार्तिकेय का उपासक था।
- ऋद्धिपुर ताम्रपत्र में विवरण मिलता है कि नल नृपति भवदत्तवर्मन की प्रधान रानी अचली भट्टारिका थी वह राजा भवदत्तवर्मन के साथ दान देने के निमित्त प्रयाग की यात्रा की थी।
- एडेंगा से प्राप्त भवदत्तवर्मन के एक मात्र स्वर्ण मुद्रा में **'श्रीभवदत्तराजस्य'** उत्कीर्ण है।

अर्थपति भट्टारक (465-480 ई.)

- भवदत्तवर्मन के पश्चात् अर्थपति उत्तराधिकारी हुआ।
- भट्टारक पद युवराज का द्योतक है, जिससे उसके ज्येष्ठ पुत्र होने का संकेत मिलता है।
- अर्थपति की शासन अवधि को डॉ. हीरालाल शुक्ल ने 460-475 ई. निरूपित किया है।
- एडेंगा में अर्थपति के दो सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिसमें 'अर्थपतिराजस्य' अंकित मिलता है।
- अर्थपति के **केसरिबेड़ा ताम्रपत्र** से विदित होता है कि **अर्थपति नलों की प्राचीन राजधानी पुष्करी में वापस आ गया था**।
- इसी के समय वाकाटकों द्वारा पुनः शक्ति प्राप्त कर लेने पर आक्रमण कर नागपुर तथा विदर्भ का क्षेत्र नलों से न केवल वापस ले लिया गया, अपितु नलों की राजधानी पुष्करी को तहस-नहस कर दिया।
- अपने पिता की भांति अर्थपति ने सोने के सिक्के भी चलाए थे।
- अर्थपति भट्टारक के **केसरीबेड़ा ताम्रपत्र** से यह ज्ञात होता है कि महाराज ने केसलक नामक ग्राम कोत्स गोत्रीय ब्राह्मण दुर्गार्य, रविरार्य तथा रविदत्तार्य को दान में दिया था ।

स्कन्दवर्मन (480-515 ई.)

- अर्थपति के बाद उसका अनुज स्कंदवर्मा शासक बना।
- इसके **पोड़ागढ़ शिलालेख** से ज्ञात होता है कि उसने नष्ट-भ्रष्ट पुष्करी को पुनः स्थापित किया।
- पोड़ागढ़ अभिलेख में इसके लिए **'नलान्वयमख्यस्य'** का प्रयोग किया गया है।
- स्कंदवर्मा ने वाकाटक नरेश देवसेन को पराजित किया था।
- स्कंदवर्मा ने **पोड़ागढ़ में विष्णु मंदिर का निर्माण** करवाया।
- पोड़ागढ़ शिलालेख के अनुसार छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ा साम्राज्य इन्हीं का था।

स्तम्भराज (515-550 ई.)

- स्कंदवर्मा एवं नंदराज के मध्य स्तंभराज का उल्लेख मिलता है।
- कुलिया ग्राम से इसके स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त हुए हैं।

नंदराज (550-585 ई.)

- बालोद जिले के कुलिया नामक स्थान से प्राप्त मुद्राभाण्ड से नंदराज के विषय में जानकारी मिलती है।
- संभवतः ये नल वंशी शासक ही था। जिसने स्तम्भराज के पश्चात् शासन किया होगा।
- इसी समयावधि में पूर्वी चालुक्य (वेंगी के) राजा कीर्तिवर्मन प्रथम 567-97 ई. ने नलों पर आक्रमण किया था।

विलासतुंग (660-700 ई.)

- विलासतुंग के **राजिम शिलालेख** से उसके पिता विरूपाक्ष और पितामह पृथ्वीराज के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है ।
- विलासतुंग विष्णु उपासक था।
- **राजिम का प्रसिद्ध राजीवलोचन मन्दिर** विलासतुंग द्वारा ही बनवाया गया था, इसका वर्णन राजिम शिलालेख में मिलता है।
- इसके समय में भंडप द्वार, मंदिर के मण्डप और कुलिकाओं का निर्माण हुआ था।
- विलासतुंग, पाण्डुवंशीय महाशिवगुप्त बालार्जुन के समकालीन थे । नलवंशीयों का प्रभाव महानदी क्षेत्र तक विस्तृत था, जिसका प्रमाण राजिम के राजिमलोचन मंदिर के निर्माण से प्रतीत होता है।

पृथ्वीव्याघ्र (700-740 ई.)

- पल्लव नंदीवर्धन के उदयेन्दिरम् दानपत्र से विलासतुंग के पश्चात् पृथ्वीव्याघ्र नामक नल राजा के उत्तराधिकार प्राप्त करने का पता चलता है।

भीमसेन देव (900-925 ई.)

- इसके डेढ़ सौ वर्ष पश्चात् एक अन्य नलवंशी राजा भीमसेन का पता चलता है, संभवतः वह शैव था।
- इसका एक ताम्रपत्र गुंजाम- कोरापुट क्षेत्र से प्राप्त हुआ है, जिसके विश्लेषण से इसकी राज्यावधि 900-925 ई. मानी जा सकती है।

नरेद्र-धवल (925-950 ई.)

- नरेन्द्र-धवल के पश्चात नलवंशी राजाओं के संबंध में कोई प्रमाणिक जानकारी नहीं मिलती।
- संभवतः दंडाकरण में नाग एवं मध्य छत्तीसगढ़ में सोमवेशियों ने इनका स्थान ले लिया।
- इस प्रकार चौथीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य लगभग 800 वर्षों तक शासन करने के पश्चात् इनका अन्त हो गया।

शरभपुरीय वंश

- लगभग 5वीं सदी ईस्वी के अन्त में दक्षिण कोसल में एक नये राजवंश की स्थापना हुई।
- **वंश के संस्थापक- शरभ**
- **राजधानी**- शरभपुर।
- इस वंश के अधिकांश ताम्रपत्र शरभपुर से प्रचलित किये गये थे। इस राजवंश को शरभपुरीय वंश के नाम से संबोधित किया जाता है।

शरभपुरीय वंशीय शासक

- भानुगुप्त के एरण स्तंभ लेख में शरभराज की स्थिति अंतिम रूप से तय नहीं हो पाई है। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह सारंगढ़ में स्थित हो सकता है।
- महाराजा नरेंन्द्र कुरूदपट्ट तथा पिपरदुला के दानपत्र से यह प्रतीत होता हे कि राजा शरभ वही शरभराज है जो गोपराज का नाना था और जिसकी मृत्यु एरण में ई.पू. 510 में हुई थी।
- संभवतः शरभराज भी गुप्त सम्राटों के प्रति निष्ठा रखता था।
- शरभ का उत्तराधिकारी नरेन्द्र हुआ। इसके तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, लेकिन इसके काल की किसी महत्वपूर्ण घटना की जानकारी नहीं मिलती।
- इसके पश्चात् **प्रसन्नमात्र** नामक एक शक्तिशाली राजा हुआ। परवर्ती अभिलेखों में वंशावली इसी नरेश से प्रारंभ की गई है।
- इसने अपने नाम से प्रसन्न नगर की स्थापना की थी, जो निडिला नदी के किनारे स्थित था।
- विद्वानों ने इसकी पहचान मल्हार के पास लीलागर नदी से की है, यदि इसे माना जाये तो प्रसन्नपुर का तादात्म्य मल्हार से स्थापित होता है।
- प्रसन्नमात्र ने भारी मात्रा में स्वर्ण तथा रजत मुद्रायें प्रचलित की थी, जिसमें गरूड़, शंख तथा चक्र अंकित है।
- इसके पश्चात् जयराज, मानमात्र, दुर्गराज, सुदेवराज, प्रवरराज आदि राजा हुये।
- प्रवरराज प्रथम अत्यंत महत्वकांक्षी राजा था, अतः उसने 'श्रीपुर' में अपनी राजधानी स्थापित की थी,
- इतिहासकार अजय मिश्र शास्त्री के अनुसार देवराज का भाई प्रवरराज द्वितीय इस वंश का अन्तिम राजा हुआ, जिसके दो ताम्रपत्र लेख ठाकुरदिया और मल्हार से प्राप्त हुये हैं।
- **सुदेवराज के महासमुंद और कौआताल अभिलेखों** में उल्लेखित सार्वधिकरण धिकृत 'इंद्रबलराज', उसका सामंत था, जो पाण्डुवंशी शासक महाशिवतीवरदेव के पितामह के रूप में समीकृत किया जाता है।
- शरभपुरियों का राजचिन्ह गजलक्ष्मी थी, जो उनके समस्त अधिकारपत्रों की मुहर पर पाया गया है।
- शरभपुरीय वंश की दो रानियों ने तालागांव के भंडारी नदी के तट पर **देरानी-जेठानी मंदिर** का निर्माण कराया।

शररभराज (342-352 ई.)

- शरभ शरभपुरीय राजवंश का संस्थापक था। इसके नाम पर ही राजवंश का नाम और राजधानी का नामकरण हुआ।
- ऐसा माना जाता है कि शरभ वाकाटक नरेश प्रवरसेन प्रथम का सामंत था
- 435 ई. में प्रवरसेन प्रथम की मृत्यु के पश्चात प्रवरसेन के पुत्रों में साम्राज्य विभाजन के दौर में केन्द्रीय सत्ता का विभाजन का लाभ शरभराज ने उठाया तथा दक्षिण कोसल में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया ।

- शरभराज ने अपने नाम के सिक्के भी जारी किए। इन सिक्कों पर पहली बार प्राकृत के स्थान पर संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया।
- **डॉ. श्याम कुमार पांडेय के अनुसार** शरभराज एक स्वतंत्र शासक था। अपने नाम पर नगर बसाता था तथा अपने सिक्के प्रचलित किया। प्रतीत होता है कि शरभराज ने अपने बाहुबल से महानदी के संपूर्ण उत्तरी भू-भाग पर अपना आधिपत्य जमा लिया था अर्थात् संपूर्ण बिलासपुर तथा रायगढ़ जिला इसके अधीन था।

महाराज महेन्द्र (360-390 ई.)

- महाराज महेन्द्र के बारे में गुप्त सम्राट समुद्र गुप्त के **प्रयाग प्रशस्ति स्तंभ लेख से जानकारी** मिलती है।
- भारत विजय के पश्चात् जब वह दक्षिण भारत विजय के लिए बढ़ा तब कोसल के महेन्द्र से उसका संघर्ष हुआ।
- समुद्रगुप्त सदृश्य सम्राट की अधीनता स्वीकार करने की पेशकश को स्वीकार न कर महेन्द्र ने वीरता से युद्ध किया, परंतु वह परास्त हुआ व कैद कर लिया गया, जिसे बाद में छोड़ दिया गया। उसे कोसल पर राज्य करने दिया गया।
- पुत्रविहीन होने के कारण उसके पश्चात् छोटे भाई नरेन्द्र राजगद्दी पर बैठा और परम्परा को आगे बढ़ाया।

महाराज नरेन्द्र (390-420 ई.)

- महाराज नरेन्द्र, शरभराज का पुत्र था।
- अपने शासन के तीसरे वर्ष में **पीपरदुला ताम्रपत्र** जारी किया।
- नरेन्द्र ने शरभ से प्राप्त राज्य का विजय अभियानों के द्वारा विस्तार किया।
- ताम्रपत्र में उसने अपनी सील में लिखवाया- "खड्ग धारा जितभुवै" अर्थात खड्ग (तलवार) की धार से सारे विश्व को जीत लेने वाला।
- नरेन्द्र के राज्य का विस्तार रायपुर जिले के राजिम, महासमुंद क्षेत्र के शिवरीनारायण, सारंगढ़ के अलावा उड़ीसा स्थित संबलपुर जिले के सोनपुर तहसील स्थित क्षेत्र तक था।
- नरेन्द्र ने अपने शासन काल के **24 वें वर्ष में कुरुद (महासमुंद के पास) से ताम्रपत्र** जारी किया था। इस आलेख से स्पष्ट है कि महाराजा नरेन्द्र का शासन काल लंबा था। आलेख स्पष्ट रूप से घोषित करता है छत्तीसगढ़ के विशाल भू-भाग के अलावा वर्तमान उड़ीसा के कुछ भागों पर नरेन्द्र का शासन था।
- नरेन्द्र वैष्णव धर्म का अनुयायी था रावन प्लेट में उसे **परम भागवत** कहा गया है।
- गुप्त संवत् के प्रयोग से गुप्तों का अधीनता का संदेश मिलता है
- नरेन्द्र के मुद्राओं में **गजभिषिक्तलक्ष्मी** का अंकन खासतौर पर मिलता है।

प्रसन्नमात्र (460 -480 ई.)

- नरेन्द्र के पश्चात प्रसन्न मात्र गद्दी पर बैठा।
- प्रसन्न का पुत्र- महाजयराज तथा पौत्र- महासुदेवराज था।
- प्रसन्नमात्र ने सोने के सिक्के उड़ीसा के कटक क्षेत्र से लेकर महाराष्ट्र के चांदा तक के क्षेत्र से प्राप्त हुए है।
- प्रसन्न एकमात्र शरभपुरीय राजा है, जिसके सोने के सिक्कों की खोज की गई है।
- इसने अपने नाम से प्रसन्नपुर नामक नगर की स्थापना की थी, जो निडिला नदी के किनारे पर स्थित था, जिसका तादात्म्य मल्हार में स्थापित है।
- डॉ. श्याम कुमार पान्डेय मल्हार स्थित टकसाल से इन्हें निर्मित मानते हैं, जिसमें पेटिका शीर्ष लिपि का प्रयोग हुआ है।
- सिक्कों के ऊपरी भाग के केन्द्र में गरुड़ तथा किनारों पर शंख और चक्र का अंकन किया गया है, नीचे के भाग में श्री प्रसन्नमात्र लिखा हुआ है।

जयराज (490 से 500 ई.)

- प्रसन्नमात्र की मृत्यु की पश्चात् उसका पुत्र जयराज उसका उत्तराधिकारी बना।
- इसे कई स्थानों पर महाजयराज भी लिखा गया है।
- जयराज का ताम्रपत्र मल्हार से प्राप्त हुआ है।
- पहली बार शरभपुरियों का शासन मल्हार के पश्चिमी दिशा में स्थित मुंगेली जिले की ओर विस्तृत होता हुआ दिखाई देता है।
- डॉ. श्याम कुमार पांडेय ने लिखा है- महानदी के दक्षिण का क्षेत्र, जिसमें संबलपुर, सोनपुर, खरियार, सारंगढ़ तथा रायपुर का क्षेत्र आता है। पहले से ही नरेन्द्र द्वारा विजित किया था, जो उत्तराधिकार में जयराज को प्राप्त हुआ था।
- दक्षिण कोसल का अधिकांश भाग जयराज के अधीन था, जिसमें वर्तमान छत्तीसगढ़ का अधिकांश भाग तथा पश्चिम उड़ीसा का क्षेत्र सम्मिलित है।
- महाजयराज वैष्णव धर्मावलंबी था। उसकी राज मुद्राओं पर गजलक्ष्मी का अंकन प्राप्त हुआ है।
- उसका शासन काल के मध्य माना जाता है। अपने ताम्र पत्रों में उसने अपने को परमभागवत लिखा है ।
- ब्राम्हणों को दान देने की प्रथा का पालन शरभपुरिय राजवंश करता था।
- संपराज भुक्ति के अंतर्गत आने वाले ग्राम राज्यग्राम को विष्णुस्वामी नामक ब्राह्मण को दान दिया गया।
- **आरंग ताम्रपत्र में पूर्वराष्ट्र शब्द** स्पष्ट करता है। कि जयराज का साम्राज्य बढ़ गया था।

मानमात्र (560 ई. से 570 ई.)

- प्रसन्नमात्र के बाद मानमात्र और दुर्गराज नामक व्यक्ति के ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं।
- जयराज की संभवतः कोई संतान नहीं थी और उसका साम्राज्य उसके भाई मानमात्र को मिला
- **मानमात्र ही दुर्गराज के नाम से उल्लेखित है**।
- पं. लोचन प्रसाद पांडे की मान्यता थी कि दुर्ग नामक नगर की स्थापना इसी दुर्गराज द्वारा अपने नाम पर की गई था।
- रायबहादुर हीरालाल के अनुसार दुर्ग का संबंध शिवदुर्ग नामक शासक से है।

महासुदेव राज (571 ई. से 580 ई)

- शरभपुर के राजाओं में महासुदेव राज के ही सर्वाधिक 8 ताम्रपत्र प्राप्त हुए है।
- सुदेवराज के रुप में भी इसका विवरण मिलता है। यह प्रसन्नमात्र का पौत्र व मानमात्र का पुत्र था।
- महासुदेव राज के 6 ताम्रपत्र शरभपुर से तथा 2 सिरपुर से जारी किए गए। इससे स्पष्ट होता है कि सिरपुर को दूसरी राजधानी का दर्जा मिला था।
- सुदेवराज का आरंग पर अधिकार इसकी आरंग से प्राप्त अभिलेख से पुष्टि होती है।
- राज्य की रक्षा लिए सिरपुर को दूसरी राजधानी बनाना आवश्यक था, जिससे दक्षिणी भाग की सुरक्षा हो सके, ऐसा प्रतीत होता है। कि महासुदेवराज को वृद्धावस्था में राज्य मिला था।
- इंद्रबल नामक व्यक्ति का उल्लेख सर्वाधिकाराधिकर्ता के रूप में हुआ है। पांडुवंशी राजा उदयन के पुत्र के रूप में इसकी पहचान की गई है।

महाप्रवरराज (सन् 580 से 590 ई.)

- सुदेवराज के पश्चात शरभवंश का शासक उसका छोटा भाई प्रवरराज हुआ।
- शरभपुर के स्थान पर उसने अपने भाई द्वारा स्थापित सिरपुर को राजधानी बनाया, इसका उल्लेख उसके ताम्रपत्रों में किया गया है।
- सुदेवराज के समय जब शरभपुर राज्य पर भीमसेन द्वितीय ने आक्रमण किया था, तब प्रवरराज ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन उसे हटाने में किया था
- शरभपुर पर शूरबल (पांडुवंशी) ने अधिकार कर लिया था, जिसे लड़ाई में परास्त कर प्रवर राज ने पुनः प्राप्त किया।
- इसने अपने भाई व्याघ्रराज को शरभपुर में शासन व सुरक्षा के लिए तैनात किया। कुछ समय पश्चात् ही शूरबल के पराजय का बदला इंद्रबल राज ने ले लिया और शरभपुर पर अधिकार कर लिया **(इंद्रबल का मलगा बिलासपुर ताम्रपत्र**) ।
- इंद्रबल ने दक्षिण कोसल में पांडुवंश की स्थापना की और इंद्रपुर नामक नगर बसाया, जो खरीद के रूप में पहचाना गया है।
- प्रवरराज भागवत धर्म का अनुयायी था। उसने **परमभागवत की उपाधि** धारण की थी।

शरभपुरिय वंश के शासन की समाप्ति

- डॉ. श्याम कुमार पांडेय 510 से 515 ई. के मध्य शरभपुरिय वंश के शासन की समाप्ति मानते है।
- पांडुवंशियों से शरभपुरियों का एक निर्णायक युद्ध हुआ था तथा इसके पश्चात् शरभपुरियों का शासन कोसल से समाप्त हो गया और नया राजवंश पांडुकुल सोमवंश का भी प्रादुर्भाव हुआ।
- शरभपुरीय शासकों का प्रशासन क्षेत्र दक्षिण कोसल तथा पश्चिम उत्कल का कुभ भू-भाग था।
- स्वर्ण सिक्कों के प्रचलन से उनकी श्रेष्ठता तथा उस युग की आर्थिक स्थिति का आभास होता है,
- सांस्कृतिक दृष्टि से श्रीपुर क्षेत्र का विकास हो रहा था।
- इस क्षेत्र में सर्वधर्म समभाव की भावना विद्यमान थी।
- सिरपुर, आरंग, मल्हार के पुरावशेषों से इस बात की पुष्टि होती है।

श्रीपुर के पाण्डुवंश अथवा सोमवंश

- **संस्थापक - उदयन**
- **राजधानी**- सिरपुर
- शरभपुरीय वंश की समाप्ति के बाद पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कोसल में अपने वर्चस्व की स्थापना की।
- ये अपने को सोमवंशी पाण्डव कहते थे। अभिलेखों में उन्हें पाण्डुवंश भी कहा गया है।
- वस्तुतः सोनपुर- बलांगीर क्षेत्र में राज करने वाले परवर्ती सोमवंशियों से भिन्नता प्रकट करने के लिए इनका उल्लेख पाण्डव वंश के रूप में किया जाता है।
- साथ ही मैकल में इस राजवंश को पाण्डुवंश तथा दक्षिण कोसल में इन्हें सोमवंशी कहा गया है।
- सोमवंशी शासक अपना उद्गम चन्द्र से मानते हैं।

प्रमुख शासक

- कालंजर के एक शिलालेख में इस वंश के आदिपुरुष का नाम उदयन मिलता है।
- उदयन का पुत्र इंद्रबल था, जो शरभपुरीय शासक सुदेवराज का सामन्त था।
- इंद्रबल ने ही शरभपुरियों को सत्ताच्युत कर पाण्डुवंश की स्थापना की थी।
- तीवरदेव के उत्तराधिकारी महाजन का एक ताम्र पत्र लेख अड़भार, सक्ती तहसील से प्राप्त हुआ है। जिसमें अष्टद्वार में एक ग्राम दान में दिए जाने का उल्लेख है।

उदयन

- उदयन को इस वंश का अदिपुरुष कहा जाता है।
- इनके उत्तराधिकारी के लेखों में इसके नाम का उल्लेख मिलता है।
- कालिंजर (उत्तर प्रदेश) के जुड़े भागों पर इसका शासन था
- दक्षिण कोसल तक उसने सैनिक अभियान किया, ऐसा कोई प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।
- **इसका उत्तराधिकारी इंद्रबल था।**

इंद्रबल

- इंद्रबल के बारे में जानकारी उनके बेटे और उत्तराधिकारी ईसानदेव के एक शिलालेख से मिलती है।
- इंद्रबल **शरभपुरीय शासक सुदेवराज का सामंत** था।
- **कौंआताल अभिलेख अनुसार** सुदेवराज मृत्यु के बाद प्रवरराज प्रथम शासनकाल में पांडुवंशी इंद्रबल ने अवसर पाकर उत्तर-पूर्वी भाग में अधिकतर शरभपुरीय शासन को समाप्त कर पाण्डुवंश की स्थापना की और श्रीपुर को राजधानी बनाया।
- इन्हें **पाण्डुवंश का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है।
- इंद्रबल के चार पुत्र थे- **नन्दराज, सुरबल, इसानदेव तथा भवदेव रणकेसरी** ।
- इसके तीसरे पुत्र **इसानदेव का उल्लेख खरोद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर के शिलालेख में** उल्लेखित है।

- **खरौद शिलालेख के अनुसार** इसानदेव ने ही खरीद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था। इसी मंदिर में प्रतिवर्ष एक लाख चावल चढ़ाने की परंपरा है।
- **भांदक शिलालेख से** चौथे पुत्र भवदेव 'रणकेशरी' के विषय मे जानकारी प्राप्त होती है।

नन्नराज प्रथम

- सबसे बड़ा पुत्र नन्नराज प्रथम, इन्द्रबल का उत्तराधिकारी हुआ।
- इसी काल में पाण्डुवंश का राज्य विस्तार एक बड़े भू-भाग में हो चुका था।
- इसने अपने शेष तीनों भाइयों को मण्डलाधिपति के रूप में स्थापित किया।

महाशिव तीवरदेव

- नन्नराज के पुत्र एवं उत्तराधिकारी महाशिव तीवरदेव इस वंश का प्रतापी राजा था।
- इस काल को पाण्डुवंशी सत्ता का उत्कर्ष काल कहा जा सकता है।
- इसने कोसल, उत्कल और अन्य राज्यों तक अपने राज्य का विस्तार कर 'सकल कोसलाधिपति' की उपाधि धारण की।
- इसके तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं। राजिम और बालोद में प्राप्त ताम्रपत्र इसके पराक्रम का संकेत देते हैं।

नन्नदेव अथवा नन्न द्वितीय

- तीवर देव का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नन्नदेव हुआ।
- इसका एकमात्र ताम्रपत्र अभार से प्राप्त हुआ है।
- इसमें इसे कोसल मण्डलाधिपति कहा गया है।
- इसकी राज्यावधि अल्प थी।

चंद्रगुप्त

- सभवतः नन्नदेव संतानविहीन था। अतः उसकी मृत्य पर तीवरदेव का अनुज चंद्रगुप्त सोम सत्ता का उत्तराधिकारी हुआ।
- सिरपुर के लक्ष्मण मंदिर स्थित शिलालेख में राजा चंद्रगुप्त का उल्लेख किया गया है।

हर्षगुप्त

- **सिरपुर लेख के अनुसार** चंद्रगुप्त का पुत्र एवं उत्तराधिकारी हर्षगुप्त हुआ।
- हर्षगुप्त का विवाह मगध के मौखरी राजा सूर्यवर्मा की पुत्री वासटादेवी से हुआ था।
- इसके दो पुत्र महाशिवगुप्त एवं रणकेशरी थे।
- हर्षगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसकी रानी वासटा ने उसकी स्मृति में सिरपुर में हरि (विष्णु) का एक भव्य मंदिर बनवाया।
- लाल ईटों से निर्मित यह मंदिर आज लक्ष्मण मंदिर के नाम विद्यमान है, जो इस क्षेत्र में उत्तर गुप्त वास्तुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है।
- यह मंदिर नागर शैली में बना हुआ है।

महाशिवगुप्त या बालार्जुन (595-655 ई.)

- हर्षगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र महाशिवगुप्त राजा हुआ जिसका **40 वर्षों का शासन** रहा।
- महाशिवगुप्त कन्नौज के **हर्ष का समकालीन** था
- बाल्यावस्था में यह धनुर्विद्या में पारंगत हो गया था। अतः यह **बालार्जुन** भी कहलाया।
- इसके राजत्व काल के **57वें वर्ष के तीन अभिलेख** प्राप्त हुए हैं।
- यह शैव धर्मावलंबी होने के बाद भी अन्य धर्मों के प्रति उदार एवं सहिष्णु था।
- इस समय राजधानी श्रीपुर एवं अन्य सीलों में **शैव, वैष्णव, बौद्ध और जैन धर्मों से संबंधित** अनेक स्मारकों एवं कृतियों का निर्माण हुआ।
- श्रीपुर इस काल में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रख्यात था। यह बात कन्नौज के हर्ष के दरबार में आये चीनी यात्री व्हेनसांग के यात्रा वृतांत से प्रकट होती है।
- **व्हेनसांग** महाशिवगुप्त के काल में ही **लगभग 635-640 ई.** के मध्य (संभवतः 699 ई.) श्रीपुर अपने दक्षिण भारत यात्रा के दौरान पहुंचा था।
- व्हेनसांग ने अनेक बौद्धविहार, स्तूप एवं बुद्ध की विशाल मूर्तियों का उल्लेख किया है, जिसकी पुष्टि पुरातात्विक अवशेषों से होती है,
- व्हेनसांग ने इस क्षेत्र का **किया-स-लो** के नाम से उल्लेखित किया है, किन्तु यहाँ की राजधानी का नामोल्लेख नहीं किया।
- उसके अनुसार यहां का राजा क्षत्रिय और बौद्धधर्म में श्रद्धा रखता था। राज्य में **सौ संघाराम (विहार)** थे, जहाँ दस हजार महायानी बौद्ध भिक्षु निवास करते थे एवं सत्तर देव मंदिर भी थे। व्हेनसांग द्वारा वर्णित अशोक द्वारा निर्मित स्तूप का पता नहीं चल सका है।
- इसके शासन काल में श्रीपुर की बहुत उन्नति हुई। इसके शासनकाल को **दक्षिण कोसल अथवा छत्तीसगढ़ के इतिहास का स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- वातापि नरेश पुलकेशिन द्वितीय के **एहोल प्रशस्ति** के अनुसार ईस्वी 634 में कोसल उसके द्वारा पराजित किया गया था और संभवतः उसने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।
- महाशिवगप्त बालार्जुन के **27 ताम्रपत्र** सिरपुर में खुदाई के दौरान प्राप्त हुए थे, जिसका सर्वप्रथम अध्ययन डॉ. विष्णु सिंह ठाकुर एवं डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र ने किया था।
- महाशिवगुप्त बालार्जुन ने शैव-सोम संप्रदाय के आचार्यों से दीक्षा प्राप्त कर शैवमत का अनुयायी बना एवं परममहेश्वर की उपाधी धारण की।

Unleash the topper in you

श्रीपुर के पाण्डुवंश का पतन

- बालार्जुन के बाद के शासक महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुये। इसके बाद इस वंश का पतन आरंभ हो गया।
- पाण्डुवंशियों के पतन में नलवंशी विलासतुंग **(700-740 ई.)** तथा बाणवंशी विक्रमादित्य **(870-895 ई.)** की भूमिकायें थीं।
- नल, बाण और कल्चुरियों द्वारा छत्तीसगढ़ क्षेत्र में राज्य स्थापित करने के कारण श्रीपुर के पाण्डुवंशीय शासकों को पूर्व की ओर जाना पड़ा तथा उन्होंने **उड़ीसा के सोनपुर क्षेत्र में सोमवंश के नाम से** राज्य स्थापित किया। इस वंश का **सर्वप्रथम राजा शिवगुप्त** हुआ।

छत्तीसगढ़ का स्वर्ण युग: पाण्डुवंश

- **6वीं शताब्दी ई**. के दक्षिण कोसल के सोमवंशी या पाण्डुवंश शासको का काल **स्वर्णयुग** कहलाता है।
- पाण्डुवंशी शासकों में **विशेषकर महाशिवगुप्त बालार्जुन** का शासन काल धर्म स्थापत्य कला एवं सांस्कृतिक विकास के चरमोत्कर्ष का काल रहा है।

पाण्डुवंशी शासकों की ताम्रनिधियां एवं शिलालेख

- पाण्डवंशी शासकों की ताम्रनिधियाँ एवं शिलालेख दक्षिण कोसल से प्राप्त हुई है।
- ताम्र पत्रों में पेटिका शीर्षलिपि एवं शिलालेखों में **कीलाझर लिपि** का प्रयोग किया गया है।
- महाशिवगुप्त बालार्जुन के **27 ताम्रपत्र (9 सेट) सिरपुर** से प्राप्त हुए।
- इसके अलावा **बरदला, बोडां, लोधिया** से एक-एक तथा **मल्हार** से तीन ताम्रपत्र, **महाशिवतीवरदेव** के तीन ताम्रपत्र **राजिम, बालोद एवं बोडा** से प्राप्त हुए।
- इस काल के शिलालेख **सेनकपाट और मल्हार एवं सिरपुर से** प्राप्त हुए हैं।
- मल्हार (57 वां राज्य वर्ष) के ताम्रपत्र से पाण्डुवंशी राजपरिवार द्वारा हाथ के पैमाने के माप से भूमिदान का उल्लेख है।

पाण्डुवंश कालीन स्थापत्य

- **बोधिसत्व नागार्जुन स्मारक एवं शोध संस्थान** (नागपुर) के तत्वाधान में भारतीय सर्वेक्षण के पूर्व महानिदेशक स्व. डॉ. जगपति जोशी एवं पुरातत्वविद भी अरूण कुमार के निर्देशन में सन् **1999-2004** तक उत्खनन कार्य हुआ।
- सन् 2004-05 एवं 2010-11 तक सांस्कृतिक एवं पुरातत्व विभाग, छत्तीसगढ़ द्वारा भी अरूण कुमार शर्मा जी के निर्देशन में **40 पुरास्थलों** का उत्खनन हुआ।
- उक्त उत्खनन में 22 शिवमंदिर, 04 विष्णु मंदिर, 10 बौद्ध विहार, 03 जैन विहार, मस्त्ल, प्रधान सेनापति का निवास, नगर का कुछ बाजार का क्षेत्र प्राप्त हुआ।

महत्वपूर्ण स्मारक

- तीवरदेव बौद्ध विहार
- पद्मपाणि बौद्ध विहार
- भिक्षुणी विहार
- जैन विहार
- लक्ष्मण मंदिर
- राम मंदिर
- सुरंग टिला मंदिर
- त्रिदेव मंदिर
- बालेश्वर महादेव मंदिर

पाण्डुवंशी सिक्के एवं मुहरें

- पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय के अनसार बालपुर से प्राप्त **'केशरी'** लेख युक्त स्वर्ण मुद्रा बालार्जुन के काल की है।
- बालार्जुन के मुद्रा पर **गजलक्ष्मी** के धर्म स्थान **कुकुदमान वृषभ तथा त्रिशुल** का अंकन है, जो शिव से संबंधी चिन्ह है।
- पाण्डुवंशी शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। अपनी मुद्राओं पर **लक्ष्मी का अंकन** करते थे एवं **'परम भागवत'** की उपाधी धारण की है।
- मेकल का पाण्डु वंशी अमरकंटक के आसपास का क्षेत्र मैकल के नाम से जाना जाता था ।
- मेकल के राजाओं के संबंध में केवल पुराणों में ही जानकारी मिलती हैं।
- यहाँ पाण्डुवंशियों की एक शाखा के राज्य करने के विषय में **भरतबल के बम्हनी ताम्रपत्र** से जानकारी मिलती है।
- प्रारंभिक दो राजाओं जयबल और वत्सराज के साथ कोई राजकीय उपाधि प्रयुक्त नहीं हुई है।
- इसके बाद नागबल के लिये महाराज उपाधि का प्रयोग किया गया है।
- नागबल पुत्र भरतबल के समय का ऊपर उल्लेखित ताम्रपत्र में इसकी **रानी लोकप्रकाशा** का उल्लेख है, जो नरेन्द्र की बहन थी।
- मल्हार से इस वंश का एक और ताम्रपत्र मिला है, जिसमें भरतबल पुत्र शूरबल का उल्लेख मिलता है।
- अभिलेखों के आधार पर पाँचवीं शताब्दी में मैकल क्षेत्र में पाण्डवंशियों की एक शाखा राज्य करती थी।

बाणवंशी

- छत्तीसगढ़ में पाण्डुवंशी सत्ता की समाप्ति में बाणवंशीय शासकों का भी योगदान था।
- कोरबा जिले के **'पाली'** नामक स्थल में मन्दिर के गर्भगृह के द्वार में उत्कीर्ण लेख से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण **महामण्डलेश्वर मल्लदेव के पुत्र विक्रमादित्य** द्वारा किया गया था।
- विक्रमादित्य को बाणवंश का राजा माना गया है, जिसका काल **870 से 895 ई.** माना गया है।
- बाणवंशी शासकों ने संभवतः दक्षिण कोसल के सोमवंशियों को बिलासपुर क्षेत्र से हटाया था।
- बाद में **कल्चुरी शासक शंकरगण द्वितीय मुग्धतुंग** ने पाली क्षेत्र को जीत लिया और अपने भाइयों को इस क्षेत्र में मण्डलेश्वर बना कर भेजा, जिन्होंने दक्षिण कोसल में कल्चुरी राजवंश की स्थापना की।

सोमवंश

- **संस्थापक- राजा शिवगुप्त**
- **क्षेत्र-** दक्षिण कौशल
- सोमवंश शासक **त्रिकलिंगाधिपति** की उपाधि धारण करते थे।सर्वप्रथम पाण्डुवंशी शासक महाशिव तीवरराज ने इस उपाधि को धारण किया।
- **त्रिकलिंग** का अभिप्राय वर्तमान उड़ीसा क्षेत्र जिसको कलिंग क्षेत्र कहा जाता था, उसके तीन भिन्न क्षेत्रों को सम्मिलित रूप से माना गया है, इसलिए इस क्षेत्र के स्वामी ने त्रिकलिंगाधिपति उपाधि धारण की थी ।
- सोमवंशी शासक अपनी विजित उपलब्धियों के बाद विभिन्न उपाधियां धारण करते थे, जैसे- **परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, परममहेश्वर** इत्यादि ।

प्रमुख सोमवंशी शासक

शिवगुप्त (850-880 ई.)

- ये सोमवंश के प्रथम शासक हुए।
- शिवगुप्त ने **परम भट्टारक, महाराजाधिराज व परमेश्वर** की उपाधि धारण की थी।
- शिवगुप्त के बारे में जानकारी **महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय के अभिलेख से** मिलता है।
- शिवगुप्त **शैव मतावलंबी** था, इसका अनुमान उनकी उपाधि **परममहेश्वर** से लगाई जा सकती है।
- इनका शासन क्षेत्र सिरपुर से लेकर, संबलपुर तथा सोनपुर तक का महानदी क्षेत्र था।

महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय (880-992 ई.)

- शिवगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय सोमवंश का शासक बना।
- महाभवगुप्त को **धर्मकंदर्प तथा स्वभावतुंग** के नाम से भी जाना जाता है।
- इसके **13 ताम्रपत्र** प्राप्त हुए हैं।
- महाभवगुप्त गुप्त प्रथम जनमेजय के त्रिकलिंगाधिपति का उपाधि धारण की थी।
- महाभवगुप्त प्रथम का उल्लेख ताम्रपत्र में परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, सोमकुलतिलक तथा त्रिकलिंगाधिपति जैसे उपाधियों के साथ किया गया है।

महाशिवगुप्त प्रथम ययाति

- जनमेजय का उत्तराधिकारी महाशिवगुप्त प्रथम था
- इसने अपने नाम पर विनीतपुर का नाम बदलकर इन्होंने ययाति नगर रखा।
- महाशिवगुप्त कलिंग, कोगोड़ा, उत्कल एवं कोसल प्रदेश का स्वयं स्थापित स्वामी बन गया।
- जनमेजय का पुत्र महाशिवगुप्त प्रथम के नाम ताम्रपत्र में सोमवंश की प्रशंसा में लिखा है कि सोमवंशी पृथ्वी पर इसलिए अवतरित हुए हैं ताकि विश्व का कल्याण और समृद्धि हो सके।

महाभवगुप्त द्वितीय भीमरथ (955-975 ई.)

- ययाति के पश्चात उसका बेटा महाभवगुप्त द्वितीय भीमराज शासक बना।
- यह शैव धर्म का अनुयायी था। इनको पृथ्वी का भूषण और कलि का कल्पवृक्ष कहा गया है, इन्होंने भी त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण की थी।

महाशिवगुप्त द्वितीय धर्मरव (975-995 ई.)

- यह महाभवगुप्त भीमरथ का पुत्र था। इनका केवल एक ही ताम्रपत्र **खंडपारा माहुल पारा** से प्राप्त हुआ है।
- ये **शैव धर्मी** थे तथा इन्होंने भी त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण की थी।
- इनको **राज मल** के नाम से भी जाना जाता था।
- **ब्रह्मेश्वर मंदिर शिलालेख** में इन्हें द्वितीय परशुराम कहा गया है।
- इनकी राजमुद्रा में कमल पर बैठी लक्ष्मी अंकित थी।

महाभवगुप्त तृतीय नहुष (995-1010 ई.)

- महाभवगुप्त तृतीय धर्मराज का भाई था।
- धर्मरथ की कोई संतान न होने के कारण उनका भाई अगला शासक बना

इन्द्रस्व (1010-1022 ई.)

- नहुष के पश्चात उसका भाई इंद्ररथ सोमवंश के सिंहासन पर बैठा।
- कलचुरि, भोज, परमार व चोल वंश के राजाओं द्वारा कलिंग, उत्कल, ओड़ के विजय के अभिलेख में उल्लेख मिलते हैं।

अन्य शासक

- महाशिवगुप्त तृतीय चंड़ीहर ययाति चंडीहर का पुत्र महाभवगुप्त चतुर्थ (उद्योव केवरी) महाशिवगुप्त चतुर्थ जनमेजय, महाभवगुप्त पंचम पुरंजय, महाशिवगुप्त पंचम कर्ण क्रमशः सोमवंशी राजा हुए
- सोमवंश का **अंतिम शासक कर्ण केसरी** था।

Unleash the topper in you